{ Vishal
V.S.J. College
Rajnagar }

Alfred Hettner
अल्फ्रेड हेटनर (1859-1941 AD)

- **जीवन-वृत्ति (Life-sketch)** → 1859 ई० में प० जर्मनी में जन्म, हेले एवं स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा, "चीली एवं पटागोनिया की जलवायु एवं भू-विज्ञान पर Ph.D, कोलम्बिया एवं एण्डिज की यात्रा, लिपजिंग एवं ड्रेसडन में भूगोल के प्राध्यापक, साइबेरिया एवं रूस की यात्रा, हेडेलबर्ग में भूगोल के प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, उ०अफ्रिका, एशिया एवं प० यूरोप की यात्रा एवं 1941 ई० में देहावसान।

हेटनर ने निम्नलिखित रचनाओं द्वारा भूगोल को समृद्ध किया —:

(a) चीली एवं पटागोनिया की जलवायु एवं भू-विज्ञान पर शोधग्रंथ
(b) द० अमेरिका पर लेख
(c) कोलम्बिया, एण्डिज की यात्राएं
(d) विश्व का प्रादेशिक भूगोल
(e) महाद्वीपों का धरातलीय स्वरूप
(f) भूगोल : इसका इतिहास, लक्षण एवं विधि
(g) मानव भूगोल (मृत्यु के बाद प्रकाशित)

इनके भौगोलिक चिन्तन पर कान्ट, हम्बोल्ट, रिटर एवं रिचथोफेन का विशेष प्रभाव पड़ा था। इन्होंने भूगोल में द्वैधता को अस्वीकार। इनके समय भूगोल में systematic एवं Regional दो विचारधाराएँ थी। इनके अनुसार यह द्वैधता भ्रामक है, क्योंकि क्षेत्रीय अध्ययन एवं अन्य क्षेत्रों से तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही सम्पूर्ण विश्व का सम्यक ज्ञान सम्भव है। अत: भूगोल में क्षेत्र-विवरण एवं विश्व के समस्त ऐतिहासिक स्वरूप - दोनों का परस्पर सम्बद्ध अध्ययन आवश्यक है।

Scanned with CamScanner

हेटनर के अनुसार मूलतः "भूगोल भूतल का क्षेत्र-वर्णन विज्ञान है।" भूगोल सिर्फ सामान्य Earth-science ही नहीं बल्कि "पृथ्वी के क्षेत्रों का विज्ञान है और ये क्षेत्र एक-दूसरे से भिन्न है।" हेटनर के अनुसार भूगोल पृथ्वी के क्षेत्र-विशेषण, क्षेत्रीय प्रादेशिक अंतरों का विज्ञान है। किसी प्रदेश के जैविक-अजैविक तत्वों की विविधताओं का पृथक पृथक अध्ययन अधूरा है। क्षेत्र-विवरण विज्ञान का उद्देश्य क्षेत्र के विभिन्न तत्वों में पारस्परिक संबंध की व्याख्या करना है। क्षेत्र विशेष के भौतिक-सांस्कृतिक तत्वों में विशिष्ट कारण-कार्य और अन्तरनिर्भर संबंध द्वारा ही वह क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से विभिन्न प्रतीत होता है।

हेटनर ने विभिन्न क्षेत्रों के पारस्परिक संबंधों के अध्ययन पर भी बल दिया। क्षेत्रों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही विश्व का एक इकाई के रूप में ज्ञान प्राप्त होता है। उनके अनुसार भौगोलिक अध्ययन का उद्देश्य पृथ्वी को सम्पूर्ण इकाई मानकर क्षेत्रीय भिन्नताओं में व्याप्त अन्तर्सम्बन्धों और क्षेत्रों के बीच सह-अस्तित्व की तलाश करना भी है। अन्यथा संकीर्ण क्षेत्रीय अध्ययन एकांगी रह जाएगा। वैसे भूगोल मूलतः प्रादेशिक है न कि सामान्य है। क्षेत्रों के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ही सम्पूर्ण पृथ्वी का सामान्य अध्ययन संभव है। अतः प्रादेशिक एवं सामान्य भूगोल में हेटनर भ्रामक है।

उन्होंने क्षेत्र विशेष में प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों तत्वों के जटिल अन्तर्सम्बन्ध को स्वीकारा। "Geography is neither a Natural nor a human science only ---- but both together" — Hettner

Scanned with CamScanner

' इस प्रकार इन्होंने भौतिक बनाम मानव भूगोल की द्वैधता को भी अस्वीकार । इन्होंने रेटजेल के एकांकी मानववादी चिंतन को भी अस्वीकार । इन्होंने भूगोल में प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों के पृथक्-पृथक् अध्ययन को अस्वीकारते हुए उनके "गतिशील" अन्तर्सम्बन्धों के अध्ययन पर बल दिया। इनके अनुसार भी सामान्य भूगोल में पृथ्वी की घटनाओं का विवरण आता है। प्रादेशिक भूगोल में प्रदेशों के प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों के जटिल एवं गतिशील अन्तर्सम्बन्धों का विश्लेषण किया जाता है।

— उन्होंने क्षेत्र-विवरण में तीन बातों को प्रमुखता दी —

- (a) प्रत्येक क्षेत्र दूसरे क्षेत्रों से प्रायः भिन्न होते हैं।
- (b) प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों में जटिल अन्तर्सम्बन्ध होता है।
- (c) क्षेत्र विशेष में परस्पर सम्बद्ध तत्व गतिशील रहते हैं।

कुछ विद्वानों ने मिथ्या आरोप लगाया था कि हेटनर ने व्यवस्थित भूगोल को प्रभावित कर प्रादेशिक भूगोल में सिर्फ क्षेत्र-विवरण को ही केन्द्र-बिन्दु माना। सामान्य एवं प्रादेशिक भूगोल में ~~सम्बन्ध~~ अन्तर्सम्बन्ध है। "जो प्रादेशिक भूगोल की मंशा को नहीं समझता, वह भूगोलवेत्ता नहीं है।" — हेटनर

प्रादेशिक भूगोल भी व्यवस्थित भूगोल के बिना अधूरा है। "व्यवस्थित भूगोल की विभिन्न शाखाओं से ही प्रादेशिक भूगोल के विभिन्न तत्वों का निर्माण हुआ है"। — हेटनर

इनकी रचनाओं का अनुवाद अंग्रेजी एवं फ्रेंच में ~~यथासमय~~ ~~यथासमय~~ यथासमय नहीं होने से द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व तक उनके चिन्तन का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उनके चिन्तन को Hartshorne ने पल्लवित किया।